कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

त्रिपथगा

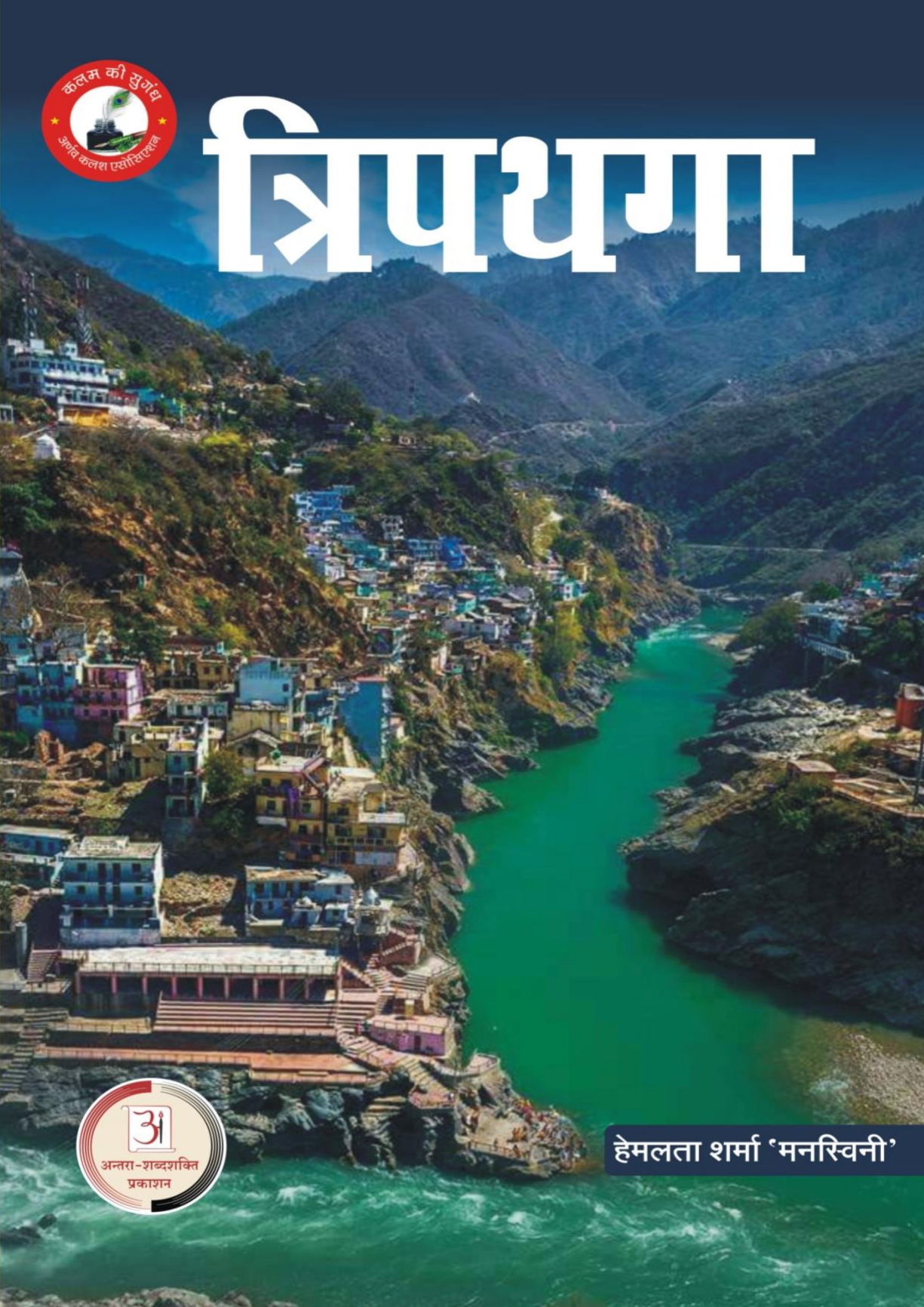

हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

त्रिपथगा

(कलम की सुगंध छंदशाला)

हेमलता शर्मा" मनस्विनी"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-235-7
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, हेमलता शर्मा "मनस्विनी"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY HEMLATA SHARMA "MANESHWANI"
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

चले निरंतर लेखनी, चमके सृजन ताज।
ईश्वर की महिमा रहे, पूरे हों सब काज।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पल शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया हेमलता शर्मा जी का एकल संग्रह "त्रिपथगा" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया हेमलता जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया हेमलता जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

अ मंदिलवार

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

आदरणीय हेमलता शर्मा 'मनस्विनी' जी आपने लगातार 100 कुण्डलियाँ छंद लिखकर अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया, मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि कुण्डलियाँ संग्रह की समीक्षा का कार्य मुझे सौंपा गया है। आपके कई साझा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, विभिन्न मंचों से आपको अनेकों साहित्यिक सम्मान प्राप्त हुए।

आपकी साहित्यिक उपलब्धियाँ आपके उत्कृष्ट साहित्यकारा होने की पहचान है, कुण्डलियाँ जैसी कठिन छंद को आपकी लेखनी ने बहुत ही सहज और सरल बना दी, जो प्रशंसनीय है।

आपने अनेकों विषयों को कुण्डलियाँ में समाहित की हैं, उन्हें प्राकृतिक बिम्बों से सजाया सँवारा है, शिल्प सधे हुए, भाव उत्तम और भाषा सरल और सुन्दर है, जो पाठक वर्ग के हृदय तक पहुँचने के लिए पर्याप्त है ।

"त्रिपथगा कुण्डलियाँ"

आपका यह सृजन साहित्य की ऊंचाइयों को छुए इसी कामना के साथ हार्दिक शुभकामनाएँ, और बहुत बहुत बधाई।

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक अंतरा शब्दशक्ति
वारासिवनी

शुभकामना संदेश

प्रिय हेमलता 'मनस्विनी' जी,

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह **'त्रिपथगा कुण्डलियाँ'** विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं ....

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी

लेखिका की कलम से

अत्यन्त हर्ष पूर्वक कह रही हूं मां सरस्वती की कृपा से मेरा कुंडलियां शतक पूर्ण हुआ। कोरोना महामारी के कारण मैंने यह साधना कठिन परिश्रम से पूर्ण की। मेरी पुस्तक का नाम 'त्रिपथगा' है।

मेरी पुस्तक त्रिपथगा में तीन प्रकार की कुंडलियां सम्मिलित की गई है। भक्तियात्मक, उपदेशात्मक एवं व्यंगात्मक। मुझे विश्वास है कि मेरी पुस्तक पाठक वर्ग के मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ेगी। आदरणीया प्रीति जी एवं अंतरा ग्रुप की आभारी हूं जिनसे मुझे कुंडलियां शतक पूर्ण करने की प्रेरणा मिली।

मेरे पति श्री राजेंद्र शर्मा एवं मेरे बच्चों का भी बहुत सहयोग मिला। वरिष्ठ साहित्यकार रेवाशंकर कटारे जी का भी सहयोग मिला उनका भी बहुत आभार। वरिष्ठ साहित्यकार शुशील शर्मा जी शिक्षक का भी समय-समय पर मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ बहुत आभार। मेरी ननद श्रीमती शकुंतला पचोरी शिक्षिका,सुधा स्थापक शिक्षिका जी का भी बहुत आभार। सभी रचनाकारों का आभार।

मंजिल

मंजिल मिलती है सदा, करते सतत प्रयास।
कांटे फूल न सर्वदा, रख मन में विश्वास।।
रख मन में विश्वास, सफलता संग रहेगी।
सुरभित चले बयार, खुशी की कली खिलेगी।।
मन मनस्विनी सूझ, रहे न कोई अमंगल।
अपना कांटे फूल, कदम चूमेगी मंजिल।।

मेरी पुस्तक-आंखो के झरने, आपातकाल की फुलवारी, रत्नावली जैसे कुछ साझा संग्रह, कई साहित्य ग्रुपों से सम्मान पत्र

मेरी कुंडलियां स्वरचित मौलिक एवं अप्रकाशित है।

हेमलता राजेंद्र शर्मा मनस्विनी
साईं खेड़ा नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश

1

शारदे

वीणा पाणी शारदे, ऐसा दो वरदान।
ज्ञान पुंज पुलकित रहे, घटे तिमिर अज्ञान।।
घटे तिमिर अज्ञान, करत माँ हंस सवारी।
देत अमरता ज्ञान, श्वेत वस्त्रों की धारी।।
मनस्विनी कर जोर, कंठ स्वर दे कल्याणी।
अनहद बाजे नाद, वरद दो वीणा पाणी।।

2

गजानन

गणनायक हे देव तुम, गौरी पुत्र गणेश।
पूजे देवों का सदन, पिता तुम्हार महेश।।
पिता तुम्हार महेश, बुद्धि के तुम हो स्वामी।
मोदक प्रीत विशेष, नहीं तुम सम है ज्ञानी।।
हेमलता कर जोर, रहो भक्तों के पालक।
लीन्ह परीक्षा जीत, बने पूजित गणनायक।

3

रघुबर के प्रिय

अतुलित बल के धाम तुम, कीन्हहुँ तुमहिं प्रणाम।
हाथ जोड़ बिनती करूँ, सिद्ध करों सब काम।।
सिद्ध करो सब काम, तमाम क्रोध सब जारी।
निर्मल मन निष्काम, करो जन मन भय हारी।।
मनस्वनी मद मोह, हरो अब प्रभु खल बल दल।
रघुबर के प्रिय दास, धाम तुम बुधि विवेक बल।।

4

गौरी

गौरी सुता गिरिराज की, स्कंद गजानन मात।
शिव भोला अर्धांगिनी, दुति दामिनी गात।।
दुति दामिनी गात, सिंह की करत सबारी।
है पुराण बिख्यात, तुम्हारी लीला न्यारी।।
मनस्विनी परिवार, चरण कमलन अधिकारी।
अँबे मन अभिलाष, करत सँपूरण गौरी।।

5

नर्मदे

भवानी देवि नर्मदे, ले कर में त्रिशूल।
भक्तों की रक्षा करें, हमें न जाना भूल।।
हमें न जाना भूल, हम मूरख अज्ञानी।
अमरकंठ से मात, चली सुन्दर सुखदानी।।
मनस्विनी कर जोर, आई शरण सुजानी।
भव सागर कर पार, मुझे जगदंब भवानी।।

6

लक्ष्मीपूजा

पूजा लक्ष्मी की करो, श्रद्धा भक्ति बढ़ाय।
घर बाहर हो रोशनी, माटी दीप जलाय।।
माटी दीप जलाय, खूब मिठाई बाँटियें।
घर गरीब के जाय, खाई धन की पाटियें।।
मनस्विनी कर जोर, तुरत प्रगट माँ हो जा।
भाँति भाँति मिष्ठान, बना कर लक्ष्मी पूजा।।

7

शैल

शैल सुता माँ सुनेना, पिता हिमालय राज।।
हाथ कमल का पुष्प है, नंदी पर असवार।।
नंदी पर असवार, मातु जन आज पुकारें।
ले कर में त्रिशूल, दुष्ट दानव दल मारें।।
मनस्विनी कर जोर, अदभुत अति मां का खेल।
महिमा अपरम्पार, निरख मुदित हैं हिम शैल।।

8

प्रतिपदा

प्रतिपदा होत चैत्रकी, आई है नवरात्र।
नवदुर्गा का ध्यान कर, हो सेवा उपकार।।
हो सेवा उपकार, बृम्हा की सृष्टि रचना।
प्रकृति सुंदर रूप, बनाये सबका रखना।।
कह मनस्विनी सही, कन्या पूजन सर्बदा।
आएगी घर लक्ष्मी, शारदे दुर्गा प्रतिपदा।।

9

ब्रम्हचारणी

ब्रम्हचारणी हिम सुता, शिव पति मन स्वीकार।
हठ आसन कर नहिं डिगा, बीतें वर्ष हजार।।
बीते वर्ष हजार, कमंडल माला धारे।
जगा हृदय मे प्रेम, पति परमेश्वर प्यारे।।
मनस्विनी कर जोर, धवल वसन माँ धारणी।
जन जन करो निरोग, हे माता ब्रम्हचारिणी।।

10

चंद्रघंटा

चंद्रघंटा दयालु मां, होकर सिंघ सवार।
अर्धचंद्र सोहे सिर, तन कुंदन उजियार।।
तन कुंदन उजियार, भुजा विशाल दस सोहे।
होत घंट का नाद, महिषा असुर बिडारे।।
है मनस्विनी शोक, दिवस प्रहर अरु घंटा।
महामारी घर-घर, रक्षा करो चंद्रघंटा।।

11

कुष्मांडा

कुष्मांडा माँ भगवती, भव की तारण हार।
अष्ट भुजी जगदंबके, जग की पालन हार।।
जग की पालन हार, तुमहिं ब्रम्हाँड बनाया।
भक्तों का कल्याण, हो जो तुमको ध्याया।।
कह मनस्विनी पूज, पुजारी मंदिर पंडा।
सकल ब्याधि भग जात, भजत माता कुष्मांडा।।

12

बंधन

बंधन क्यों बंध गया, यह सारा संसार।
कालचक्र भी थम गया, क्या हुआ बीमार।।
क्या हुआ बीमार, कौन सी बिपदा आई।
कभी नहीं लाचार, चन्द्र पर विजय पाई।।
कह मनस्विनी सार, अब छोड़ सारे क्रंदन।
कोरोना को मार, नेह से बांधों बंधन।।

13

कार्तिक

शिव शंकर जिनके पिता, माँ पारवती स्कंद।
जगत करत है आरती, गाते सुन्दर छंद।।
गाते सुन्दर छंद, कमल आसन भुज चारी।
कार्तिक सुत सिरमौर, करत सुरपुर रखवारी।।
मनस्विनी कर जोर, पिता जिसके डमरु धर।
जन्में गिरि कैलाश, मुदित भोला शिव शंकर।।

14

कात्यायनी

कात्यायनी की तपस्या, माँ दीन्हाँ वरदान।
पुत्री बन अवतरित हो, कात्यानी जग जान।।
कात्यानी जग जान, दिया तेज देव तन ने।
कर असुरों का नाश, ले तलवार कर तन में।।
मनस्विनी कर पूज, हो प्रमुदित वरदायनी।
कालंदी के तीर, प्रगटी माँ कात्यायनी।।

15

दुर्गा

दुर्गा मातु कालरात्री, धर चंडी का रूप।
समरांगण में अवतरी, तंत्र मंत्र से पूज।।
तंत्र मंत्र से पूज, गधा की करत सवारी।
खप्पर लेकर हाथ, सोणित बीज पी जाती।।
मनस्विनी कर जोर, हरो मां जग की विपदा।
कोरोना का पि लहु, बन मां कालरात्रि दुर्गा।।

16

सिद्धिदात्री

सिद्धिदात्री कमलासना, कर कमलों को धार।
अष्टसिद्धिय दे सदा, जो पूजे चित धार।।
जो पूजे चित धार, पूर्ण मनसा माँ करती।
देकर माँ वरदान, नित्य सँकट सब हरती।।
मनस्वनी कर जोर, करत पूजन वरदात्री।
कर माँ जग कल्याण, राजत सिंह सिद्धिदात्री।।

17

हनूमान

हनूमान सँकट हरो, जन जन करते आस।
दुख दरिद्रता दूर कर, मार भगाओं त्रास।।
मार भगाओ त्रास, सुरसा मुँह खोल रही।
जग में हाहाकार, भूमि भी अब डोल रही।।
मनस्विनी कर जोर, सुन विनती दया निधान।
पूनम चेत पुनीत, जग प्रगटित भे हनुमान।।

18

हंसवाहनी

ना जानू कछू साधना, नाहिं वेद पुराण।
ना स्वर न कछु ताल है, में मूरख नादान।।
में मूरख नादान, करके कृपा हंस वाहनी।
स्याही कलम दवात, मात गुण लिखत लेखनी।।
मनस्विनी कर जोर, छंद नाही पहचानू।
बीणा वादिनि छोड़, चरण दूजा ना जानू।।

19

बजरंगबली

हनुमान बजरंगबली, माता अंजनी पुत्र।
लंका लांघि पार करी, छीपे अशोका पत्र।।
छीपे अशोका पत्र, जानकी अति दुखियारी।
राम नाम सुमीरत, दीन्ह मुद्रिका डारी।।
मनस्विनी कर जोर, करि राम भक्त प्रणाम।
भई जानकी चकित, तब चरण पड़े हनुमान।।

20

पार्वती

मां भवानी पार्वती, रहती शिव के संग।
अर्ध नारीश्वर सदा, बहती शिर से गंग।।
बहती शिर से गंग, अन्नपूर्णा कहलाती।
हो जाती प्रशन्न, जगत खुशहाली लाती।।
मनस्विनी कर जोर, तेरी करुं आरती मां।
भगे करोना चोर, भवानी पार्वती मां।।

21

गौ माता

गौ माता गुण खान है, महिमा किमि कह जाय।
दूध दही घृत अमिय सम, अतिशय गौ जग भाय।।
अतिशय गौ जग भाय, विपति काम धेनु हरती।
गौ गोपाल चराँय, नित्य गोबर्धन चरती।
मनस्विनी गौ खाद, अन्न भारी उपजाता।
धन धान बढाकर स्वाद, पालत हमें गौ माता।।

22

काशी

पंच कोश में बसत है, कासी नाम कहाय।
त्रिशूल ऊपर जा धरी, शिव का धाम बनाय।।
शिव का धाम बनाय, बेतरनी से तारती।
करती बेड़ा पार, भव से पार उतारती।।
मनस्विनी कर जोर, हरती बिकार कर रोस।
देती भक्तन मोक्ष, बसे कासी पंचकोश।।

23

गीता

गीता सिखलाती सदा, देती हमको ज्ञान।
जीवन में सँयम रहे, रखो मान सम्मान।।
रखों मान सम्मान, कर्म की प्रथमहिं पूजा।
कर्महि में भगवान कर्म सा तप ना दूजा।।
कह मनस्विनी कर्म, श्रेष्ठ करके जग जीता।
पारथ को श्री कृष्ण ने, सुनाई भगवत गीता।।

24

रामायण

रामायण पढ़ते रहों, हो जीवन खुशहाल।
मर्यादा नहिं पार हो, चलें धर्म युत चाल।।
चलें धर्म युत चाल, नेह भाई से करते।
बिटिया भगनी मात, नारि का गौरव रखते।।
कह मनस्विनी याद, रहे शुभ सदा आचरण।
हो नीके आचार, सीख देती रामायण।।

25

पूजन

पूजन हित कोशिल्या, लय पकवान बनाय।
झूलत पलना राम जी, मंद मंद मुस्काय।।
मंद मंद मुस्काय, रसोई मातु बनाती।
कुल देवन को पूज, छप्पनहिं भोग लगाती।।
गनपति गोरि मनाय, मनहि मन मां हर्षाती।।
कह मनस्विनी राय, मुदित महान प्रजाजन।
धर मेवा मिष्ठान, करें भगवन की पूजन।।

26

होली

होली आई साँवरे, धरत ना मनवा धीर।
तुम मथुरा जाकर बसे, हम यमुना के तीर।।
हम यमुना के तीर, कवन बिधि मिलना होवे।
उड़त गुलाल अबीर, कृष्ण बिन कछु नहिं भावे।।
मनस्विनी कर प्रेम, मन ही मन कछू डोली।
ऐसा निष्ठुर श्याम, संग कैसे हो होली।।

27

मां

मां ममता का रूप है, मां मक्खन सा नाम।
मां सरदी की धूप है, होती मां भगवान।।
होती मां भगवा, होत मां काशी काबा।
मां ममता की खान, मां का प्रेम आकाशा।।
कह मनस्विनी सुनो, अमिय दूध पिलाती मां।
इसीलिये जगत में, कहलाती भगवान मां।।

28

परहित

परहित जैंसा धर्म हो, पर पीड़ा ना पाप।
जो पीड़ा दे और को, मिले नरक का ताप।।
मिले नरक का ताप, अपजस मिले जा जग में।
सुन मूरख नादान, हरिहर बसे तन मन में।।
मनस्विनी मन साध, मिले स्वर्ग हिय भित में।
मानुष का तन पाय, समय बिताय परहित में।।

29

रंग रुप

रंग रुप सब अलग हैं, अलग अलग परिवेश।
अनेकता में भी एकता, मेरा भारत देश।।
मेरा भारत देश, सँस्कृती रक्षित होती।
हिमगिरि शाँत सुशील, पाप जहँ गंगा धोती।।
मनस्विनी कर प्रीत, है परम्परा अनुरूप।
अतिथि स्वागत रीत, सुखदतम छवि रंग रुप।।

30

रंग सात

सात रंग रंगी धरा, मत जाना परदेस।
इंद्रधनुष अभी उतरा, लेकर यह संदेश।।
लेकर यह संदेश, क्यों बटारा रंग का।
हरिया लाल सफेद, भारत वर्ष हम सबका।।
मनस्विनी कह सुनो, मुरख क्यों खून बहात।
छोड़-छाड़ सब बैर, अपना लये रंग सात।।

31

श्रमिक

सूरज उग पूर्व दिशा, करना है कुछ काम।
काम काज के बिना, मोही कहां बिश्राम।।
मोही कहां बिश्राम, दुनिया चलती श्रमिक से।
श्रमिक लेत अवकाश, समय के थमते पहिये।।
मनस्विनी जग सार, कर्म पथ चाले पूरब।
करते जग उजियार, जब निकलें भौर सूरज।।

32

मंगल

मंगल मंगल हो भला, रहे न मन में बैर।
भड़क दंग नआग लगा, मांगो सबकी खैर।।
मांगो सबकी खैर, बने हम प्रेम पुजारी।
लिया तराजू तोल, नफरत पर प्रेम भारी।।
कह मनस्विनी बात, हो ना कहीं अब दंगल।
बने फिर शांति दूत, गायें सब हि मिल मंगल।।

33

पीहर

छूटत दहरी तात की, भाई बहिन अरुमात।
मन से मन मिल जात जब, फेरे पड़ते सात।।
फेरे पड़ते सात, छुटे सब सखी सहेली।
आँगन लो सब जाँय, छोड़ कर जिसे अकेली।।
कह मनस्विनी देख, डोरी नेह की टूटत।
पिया संग ससुराल, पीहर तबहु छूटत।।

34

प्रेम

प्रेम भक्ति के योग से, प्रभु के दर्शन होंय।
भक्ति बिना जप तप किये, तन धन बृथा खोंय।।
तन धन बृथा खोंय, समय की करते हानी।
बीती उम्र तमाम, छोड़ दे अब नादानी।।
कर मनस्विनी सोच, रहे कुशल सब क्षेम।
जीवन के दिन चार, भक्ति से भर हृदय प्रेम।।

35

बाल अवस्था

बाल अवस्था पाँव से, रहते अति गतिमान।
यहाँ वहाँ शिशु भागते, मां की गोद महान।।
माँ की गोद महान, युवाअवस्था चपल भरी।
होत वही हैरान, गुरु सँगत नाहि करी।।
मनस्विनी कर गान, आये जब जरा अवस्था।
मूढ़ वृथा बिन ज्ञान, ज्ञान नहीं बाल अवस्था।।

36

करुणा

करिके करुणाकर कृपा, मेरी सुनो पुकार।
विनय करुँ कर जोर के, भव के तारन हार।।
भव के तारन हार, गरीबो के तुम स्वामी।
शरण पड़ी मैं आज, अधम अधना खल नामी।।
मनस्विनी कर जोड़, रही प्रभु के पग पर के।
नैया निज मझधार, निहारों करुणा करके।।

37

तन

तन की शक्ति कछु नहीं, मन होता बलवान।
ज्यों लगाम घोड़ा कसे, त्यों सँयम मन मान।।
त्यों सँयम मन मान, तबहि रथ चले सुपथ पर।
जगहित करत विचार, चले दिनकर ज्यों रथ पर।।
मनस्विनी परिवार, सुयश फैलें चहुँ दिश घन।
हो जग में उजयार, अघ सुकृत से धो तन।।

38

सिन्धू

सिन्धू मंथन लालसा सुर असुरन लइ ठान।
बासूकी रसरी बना, लागत मेरु मथान।।
लागत मेरु मथान, क्षीर सागरमथ डारो।
निकसे चोदह रत्न, नील कंठहुँ बिष धारो।।
धनवंतरि गज धेनु, मणि, कल्प, अमिय रस बिन्दू।
रंभादिक शुचि शंख, मथन मह प्रगटे सिन्धू।।

39

मनवा

मनवा जा सँसार में, सुख दुख चालत साथ।
कहुँ छाया कहुँ धूप है, कहूँ होत बरषात।।
कहूँ होत बरषात, जीवन में रंग भर लें।
नाहक नर घबरात, सुसँगति जन मन कर ले।।
कह मनस्विनी बात, होत चंचल योवनवा।
ज्यों होते दिन रात, फिरें काल चक्र मनवा।।

40

माता

माता प्रथमहि पूजिये, दूजे पिता महान।
तीजे गुरवर वंदना, कहते वेद पुरान।।
कहते वेद पुरान, मन में सँदेह ना करना।
करके नित सम्मान सुयश जीवन में भरना।।
कह मनस्विनी बात, जगत सब झूठा नाता।
जीवन हो गतिमान, पूज गुरुवर पितु माता।।

41

माटी

माटी का पुतला बना, प्रभु ने बाँधी डोर।
जीव सकल मर्कट बना मुकुट मदारी मोर।।
मुकुट मदारी मोर, जगत को नाच नचाते।
सृष्टि के सिरमोर, पतन से हमें बचाते।।
मनस्विनी कर जोर, जगत की ओघट घाटी।
मन मूरख अब चेत, अँत तन मिल है माटी।।

42

सुख

सुख में चलते संग सब, दुख में चलें न कोय।
जो साथी दुख में चलें, परम हितेषी होय।।
परम हितेषी होय, हमेशा साथ निभाये।
राई सम निज जान, मित्र दुख सिला दिखाये।।
कह मनस्विनी नित्य, सके सुलझा तेरा दुख।
दुर्गम पंथ पहार, टार कर दे तुझको सुख।।

43

राधिका

होली खेलें राधिका, मन मोहन के संग।
खेल रही है गोपियाँ, होली का हुरदंग।।
होली का हुरदंग, खेलती ब्रज की सखियाँ।
घूँघट मुख पे डाल, श्याम छुप देखें अँखियाँ।।
मनस्विनी मन मीत, मली मुख माहीं रोली।
तज लज्जा घनश्याम, राधिका खेलें होली।।

44

शबरी

शबरी भजती राम को, चुने भोर नित फूल।
थाके नहिं विश्राम कर, बुहुरे कंटक धूल।।
बहुरे कंटक धूल, भरत नित बेर छवरिया।
आवत लक्ष्मण राम, कानन भिलनि दुअरिया।।
मनस्विनी हरि हेर, बिसारी तन सुधि सबरी।
चख कर मीठे बेर, खिलाय राम को शबरी।।

45

मोहन

मोहन की अति बाँसुरी, है जी का जंजाल।
सूरत तेरी साँवरी, नैना करे कमाल।।
नैना करे कमाल, चितोवन तिरछी तेरी।
गलियन करत धमाल, मटकिया फोड़त मेरी।।
मनस्विनी अब लाज, नही लागत ओगुन की।
माखन चोरी हाथ, पकड़ लीन्हीं मोहन की।।

46

नारी

नारी तेरे सामने, विधि ने मानी हार।
जो चाहा तूने किया, मुठ्ठी में संसार।।
मुठ्ठी में सँसार, सदा सूरत मन भाती।
धन्य यशोदा भाग्य, ब्रम्ह को नाच नचाती।।
मनस्विनी रण जीत, उर्मिला लखन बिचारी।।
सावित्री यमराज, छुड़ाये पतिब्रत नारी।।

47

जग में

जग में सुन्दर राम से, बड़ा राम का नाम।
तरें अजामिल नाम ले, ध्रुव प्रहलादि तमाम।।
ध्रुव प्रहलाद तमाम, गज गणिकादी सुतारी।
जपकर उलटा नाम, वाल्मीक कविता न्यारी।।
कह मनस्विनी श्याम, पुकारत आवत मग में।
भव सागर कर पार, सहज जाते नर जग में।।

48

अरुणांचल

अरुणाचल से उदित हो, चढ़ रथ पर तैयार।
सत्यकर्म पथ पर सदा चलता मन में धार।।
चलता मन में धार, जगत को जीवन देता।
कर स्वारथ परित्याग, अँधेरा सब हर लेता।।
मनस्विनी विश्राम, करें रजनी अस्ताचल।

उठके प्रातः काल, उदित हो रवि अरुणाचल।।

49

कर

कर में लेकर लेखनी, ले माँ आर्शिवाद।
सरस्वती के पुत्र बन, पाओ महा प्रसाद।।
पाओ महा प्रसाद, जगत के सुख दुख बांटो।
रख समता व्यवहार, खाई दिलों की पाटों।।
कर मनस्विनी आस, निराशा तज कर उर में।।
परमारथ हित खास, कलम होवे निज कर में।।

50

श्याम

कमल अधर दो पांखुरी, छवि सलोनी श्याम।
बाजत है कटि करधनी, पहन पैजनी पांव।।
पहन पैजनी पांव, पीत झंगुलिया सोहे।
मुख लट घुंघराली, बिच बिच दतियां मोहे।।
मनस्विनी कह धूल, वनहि घूमे चरण कमल।
सोंटी ले ले फिरत, गैया पाछि चरण कमल।।

51

कोरोना

कोरोना से दूर रख, हवा नीर अरु अन्न।
इनसे है जीवन सदा, रहना सुखद प्रसन्न।।
रहना सुखद प्रसन्न, आचरण शुभ अपनाओ।
हाथ पाँव कर साफ, मास्क मुँह में पहनाओ।।
कह मनस्वनि बात, कहीं बाहर दोरोना।

करना घर में बास, रहे जब लो कोरोना।।

52

महामारी

कोरोना के रोग से, मत मनवा घवराय।
चंद रोज की बात बस, आपहु ये मर जाय।।
आपहु ये मर जाय, सँयमित जीवन शैली।
अपना शाकाहार, त्याग दें सब रंग रैली।।
कह मनस्विनी मान, भोज अभक्ष्य करोना।
आयुर्वेद मिटाय, महामारी कोरोना।।

53

सुख दुख

सुख दुख दोनों है सदा, जैसे दिन अरु रात।
बारी बारी आत है, कब दुख सबहिं सुहात।।
कब दुख सबहिं सुहात, कछु दिन दुख मेहमानी।
को अपना को गैर, तनिक ना हम पहचानी।।
कह मनस्विनी चेत, भूल ना साथी सुख दुख।
काल चक्र आधीन, जगत में होते सुख दुख।।

54

सखी

सखी मेरी काव्य है, कविता मेरी जान।
काव्य में मन रमत है, कविता बिन निष्प्रान।।
कविता बिन निष्प्रान, सुख दुख की है सहेली।
जीवन है रस हीन, रह जाती एक पहेली।।
मनस्विनी भज छंद, काव्य अमि धारा सखी।

निर्झर निसरत छंद, चौपाई दोहा सखी।।

55

गुरुवर

करुणा गुरुवर ने करी, हो मेरा कल्यान।
प्यासे को अमृत मिला, पिला धर्म का ज्ञान।।
पिला धर्म का ज्ञान, इक इक ज्योत जगाई।
नश्वर जग को मान, लीन्ह प्रयास बुझाई।।
कह मनस्विनी बात, फैले यश की अरुणा।
जागा अंतरज्ञान, जागी गुरुवर की करुणा।।

56

लंका

लंका पुरी बृम्हा रच, होत सुमेरु समान।
सुख समृद्धि स्वर्ग सी, है कुबेर धनवान।।
है कुबेर धनवान, रावण सिर शिव चढ़ाये।
शिव भोले भंडार, लंका दान कर आये।।
मनस्विनी भज राम, रावण हि बाजे डंका।
सकुच देत भगवान, विभीषण को वह लंका।।

57

शंखनाद

शंखनाद सब कर रहे, सुघर सुहानी शाम।
देख ऐकता हिंद की, अचरज विश्व तमाम।।
अचरज विश्व तमाम, कोरोना महामारी।
सामना मिलकर कर, दानव रक्त सा भारी।।
मनस्विनी देशहित, निज स्वार्थ कर त्याग।

जन-जन ने कर दिया, घर घर समर शंखनाद।।

58

जाएगा कोरोना

कोरोना अब जाएगा, होगी उसकी हार।
देख हिंद की ऐकता, रह गए बस दिन चार।।
रह गए बस दिन चार, होशियारी से रहना।
दूर से नमस्कार, गले हाथ नहीं मिलना।
मनस्विनी दिनकछू, घर में प्रेम से रहना।
मन में भज भगवान, भग जाएगा कोरोना।

59

सेवा

सेवा भाव मन से करो, करो प्रतिज्ञा आज।
देश प्रेम सर्वोपरि, करना है कछु काज।।
करना है कछु काज, कलम का फर्ज निभाओ।
मोदी का सन्देश, द्वारे द्वार पहुंचाओ।।
मनस्विनी मनजीत, आहुती जन-जन देगा।
महामारी से जीत, करे तन मन से सेवा।।

60

स्नेह पल्लव

नेह पल्लवों से रहे, हरा भरा परिवार।
सूख न पाये बृक्ष ये, बरगद सा संसार।।
बरगद सा संसार, प्रेम से सींचत रहना।
आयेगा रितुराज, शीत ताप सब ही सहना।।
मनस्विनी कर याद, मिले अपनों से संबल।

गूंजे सुर लय साज,हो पुलकित नेह पल्लव।।

61

उर्मिला

उर्मिला खड़ी द्वार पर, सजा आरती थाल।
लक्ष्मण राम जाय रहे, वन को चौदह साल।।
वन को चौदह साल, माता जानकी सेवा।
है भैया रघुनाथ, इष्ट ना कोई दूजा।।
मनस्विनी संगीत, लक्ष्मण से है उर मिला।
जला द्वारे दीप, प्रतीक्षा करत उर्मिला।।

62

मंजिल

मंजिल मिलती है सदा, करते सतत प्रयास।
कांटे सूमन सर्वदा, धर मन में विश्वास।।
धर मन में विश्वास, सफलता संग रहेगी।
सुरभित चले बयार, खुशी की कली खिलेगी।।
मनस्विनी मन फूल, रहे ना कोई अमंगल।
अपना कांटे फूल, कदम चूमेगी मंजिल।।

63

मधुमास

मधु मास आवे तभी, जब पतझड़ का अंत।
दुख बीते सुख ना मिले, कहते आए संत।।
कहते आए संत, सुख-दुख साथ ही चलते।
आवत एक एक जात, मनुज धर धीरज सहते।।
कह मनस्विनी बात, राखो मन में विश्वास।

सबके जीवन आत, सुरभित सुमन मधूमास।।

64

बंधन

बंधन बांधो प्रेम के, रहो नेह से गेह।
फिर कब मिलना होयगा, होत तनिक संदेह।।
होत तनिक संदेह, बाहर पग यूं न धरना।
करो बच्चों स्नेह, पछीताओगे बरना।।
दिन मनस्विनी चंद, सुधारो कर्म से लक्षन।
ताक झांक कर बंद, बांधों परिवार बंधन।।

65

विनती

विनती राजा राम की, कर मैं बारंबार।
धनुष उठाय रक्षा करो, काम क्रोध को मार।।
काम क्रोध को मार, प्रजा जन अति दुखियारी।
कर जन पूजा-पाठ, देत्य बड़े अति भारी।।
कह मनस्विनी राय, घर घर श्वासें थमती।
असुर नाश हो जाय, सुनो प्रभु मेरी विनती।।

66

रामराज्य

राम राज्य स्थापना, हो गई चारों ओर।
झूठे चोरी झगड़ना, मिलत कहीं न ठौर।।
मिलत कहीं ना ठोर, नियम संयम से रहते।
मात-पिता परिवार, भोजन भजन मिल करते।।
मनस्विनी जु शराब, सब ताले लगे विराम।

कोरोना की मार, छाय रहे कलयुग राम।।

67

राम स्तरीय

राम सत्य अरु प्रेम है, रामहि वेद पुरान।
राम सनातन धर्म है, अतुलित बल के धाम।।
अतुलित बल के धाम, कर्म का पालन करते।
राम राम भज राम, रोम रोम जहां बसते।।
कह मनस्वी राम, सुवह गाओ और शाम।
धर्म अर्थ और काम, पाते भजते जो राम।।

68

हरी चरण

चरण पकड़ लो हरी के, जब लग घट में प्रान।
भटके पंथ कुपंथ से, हरि बिसरे तब जान।।
हरी बिसरे तब जान, ये काया है उधारी।
धर्म ध्वज कर धार, तबहि भव पार उतारी।।
कह मनस्विनी बात, भवसागर जीवन मरण।
प्रभु बंधन दे काट, जो गहो तुम हरी चरण।।

69

तुलसी

तुलसी बिरवा आंगना, हो घर में प्रत्येक।
करती लक्ष्मी वासना, सुख संपन्न अनेक।।
सुख संपन्न अनेक, वृंद दल चढत नरायण।
तुलसी पत्र से एक, हो एकादशी परायण।।
मनस्विनी आचरण, देखे वृंदावन हुलसी।

हो शुचि बातावरण, राखों घर माहि तुलसी।।

70

सिंधु

सिंधु तट चमू राम की, बेठी आस लगाय।
विनय करें कर जोर के, पंथ नहीं दिखलाय।।
पंथ नहीं दिखलाय, समंदर गरबे भारी।
दिवस तीन है जाय, कर धनु बाण संधारी।।
कह मनस्विनी सोच, भय बिन सुधरे ना बंधु।
रतन लिए कर जोर, अब विनय कर रहा सिंधु।।

71

चिड़िया

चिड़ियां बैठी पर शाख पर, नीर विन कुम्हलाय।
बांध सकोरे आंगना, पक्षी प्यास बुझाय।।
पक्षी प्यास बुझाय, जल ही जीव है समझो।
नदियां करो सफाय, व्यर्थ ना पानी फैंको।।
कह मनस्विनी तरु, बिन ना रहेगी चिड़ियां।
बेघर होत पखेरु, फिर ना दिखेगी चिड़ियां।।

72

मध्यप्रदेश

प्रदेश की वीरांगना, जग जाहिर कहलाय।
पतित पावनी नर्मदा, कल कल बहती जाय।।
कलकल बहती जाय, जीवन रेख कहलाती।
है किसान खुशहाल, सुख शांति बरसाती।।
कह मनस्विनी आज, है वन संपदा विशेष।

हिंद हृदय कहलाय, भारत में मध्य प्रदेश।।

73

चैत्र

चैत्र महना मार्च को, दीप जलाओ पांच।
जगाते शक्ति रहो, हिंद ना आए आंच।।
हिंदी न आये आंच, एकता का वोल बाला।
चीन न बोले सांच, मुंह हो जाये न काला।।
कह मनस्विनी सुनो, भैष भूषा रखो पवित्र।
कोरोना असुर का, संहार करेगा चैत्र।।

74

दृष्टा

दृष्टा जगत देख रहा, जगमग करती रात।
दिवाली विन मिल रही, रोशन की सौगात।।
रोशन की सौगात, चौकीदार ले आया।
कोरोना औकात, सबका ध्यान बढ़ाया।।
कह मनस्विनी सुनो, महामारी न अदृष्टा।
धीरज मन में धरो, होंगें खुशहाल दृष्टा।।

75

अंधियारा

अंधियारा जबहि घटे, मानो होत प्रभात।
दीपक जगमग कर उठे, दीवाली बिन रात।।
दिवाली बिन रात, घर बाहर दीपमाला।
भेदभाव अरु जात, न रहा कहीं मन मैला।।
कह मनस्विनी देख, घर घर छाय उजियारा।

घर दीपक जब चेत, भाग दूर अंधियारा।।

76

मन

मन की शक्ति होती है, तन से भी बलवान।
तन से दुर्वल कछु नहीं, मन से होत महान।।
मन से होत महान, दिल से जगत को जीते।
मानी मन से हार, रह गये जग से रीते।।
कह मनस्विनी बात, सदा कर प्रभु का सुमिरन।
मन भीतर सुख शांति, भटके बाहर फिर न मन।।

77

दीपक

दीपक है भगवान का, बाती मानव जीव।
तेल रहे बाती जले, बुझे तेल बिन दीप।।
बुझे तेल बिन दीप, करो परमार्थ साथी।
जगत को कर प्रदीप, फिर तेल रहे न बाती।।
कह मनस्विनी चेत, कहीं लग न जाते दीमक।
तन मानव विधि लेख, यूं बुझ न जाये दीपक।।

78

ज्ञान

निर्मल ज्ञान सरिता जल, जो नर करें स्नान।
राम चरण भक्ती बढे, करें जगत कल्यान।।
करे जगत कल्याण, भव सिंधु पार उतारे।
मन विकार अरु ताप, राम भजन सबहि जारे।।
कह मनस्विनी राम, काम क्रोध करें शीतल।

गंगा करत स्नान, तन-मन हो जाये निर्मल।।

79

परमारथ

परमारथ कर ले जरा, मौका दिया बनाय।
मुठ्ठी बांधे आयेगा, हाथ पसारे जाय।।
हाथ पसारे जाय, करनी आप भुगत रहे।
कर प्रकृति विनाश, धरती शीश पटक रहे।।
सुनो मनस्विनी बात, जन जन का कर स्वागत।
घर से ही कर दान, यही तो है परमारथ।।

80

जलाशय

जलाशय देख पथिक जन, पिये जाय सर नीर।
नीरज नाल पुष्प खिले, मधुप करत गुंजीर।।
मधुप करत गुंजीर, मच्छ कच्छप अति उछले।
मदन कांधे तुणीर, तकि तकि बाण काम चले।।
मनस्विनी कर बार, मयंक झांकत जलाश्य।
पूनम शरद बिहार, राधेश्याम जलाश्य।।

81

मां का प्रेम

मां का प्रेम मोल नहीं, मिलता है बिन दान।
निस्वारथ बरसे सदा, जब तक तन में प्रान।।
जब तक तन में प्रान, सुत पर ममता लुटाती।
रहे सदा खुशहाल, भूख प्यास तज जाती।।
कह मनस्विनी सुनो, सुत से बिमुख ना हो मां।

मां होती प्रथम गुरु, हो पुत्र कष्ट ना सो मां।।

82

सैनिक

सैनिक देश की शान है, हम इनसे खुशहाल।
सैनिक आनो वान है, इन पर हमको नाज।।
इन पर हमको नाज, डटे रहते सीमा पर।
बर्षा शीत अरु ताप, सहते देश की खातिर।।
मनस्विनी बड़ भाग, इनको सलामी दैनिक।
देकर के बलिदान, देश रक्षा करें सैनिक।।

83

किसान

किसान ही है देवता, जन जन क्षुधा मिटाय।
रात दिन मेहनत सदा, जगत उदर भर जाय।।
जगत उदर भर जाय, पशु-पक्षी भी सब पलते।
नव चेतन संचार, प्रकृति इनसे चलते।।
कह मनस्विनी सुनो, राखो किसान सम्मान।
आलस शयन त्याग, जागे दिन-रात किसान।।

84

बरषा

बरषा लगे मन भावनी, लाती नीर फुहार।
सूखे तरू को तारती, कर जीवन संचार।।
कर जीवन संचार, तालो तलैया भरते।
होवे सुर गुंजार, पक्षी कलरब करते।।
कह मनस्विनी मेघ, निरखत ही मनोहरषा।

वसुधा नहीं अघाय, जब तक न होवे बरषा।।

85

दान

दान से यश छायेगा, ज्यों सूर्य प्रकाश।
दान कर नहीं घटेगा, आवे दुगुना पास।।
आवे दुगुना पास, जग में नाम हो ऊंचा।
धन बिन धरम न होय, क्यों जीवन धन सींचा।।
मनस्विनी की राय, आशीश देत भगवान।
पुण्य की जड़ पताल, कर धरम पुण्य अरु दान।।

86

अहिल्या

अहिल्या नार पतिव्रता, पति सेवा निज कर्म।
पाषाण पति श्राप बनी, पति सेवा निज धर्म।।
पति सेवा निज धर्म, विधाता का लिख डारी।
समझकर राम मर्म, शापित अहिल्या तारी।।
कह मनस्विनी पूत, जनमे मात कौशल्या।
मिला उसे सम्मान, तापसी सती अहिल्या।।

87

मौन

मौन हूं अनभिज्ञ नहीं, दिन जीवन के चार।
उत्पात अति करत है, न समझ नहीं विचार।।
न समझ नहीं विचार, जग है प्रभु की माया।
होवे रंक नरेश, नरेश रंक हो जाता।।
मनस्विनी उपकार, यश परमारथ कर कौन।

लिया सत स्वीकार, अनभिज्ञ नहीं हूं मौन।।

88

देश

लिया जनम जिस देश में, मिला ज्ञान जिस देश।
जागे मन यह भावना, सत्य प्रेम संदेश।।
सत्य प्रेम संदेश, पहुंचे घर घर द्वारे।
मिटे द्वेश अरू क्लेश, रहे मिल भाई चारे।।
कह मनस्विनी सोच, कैसा पुण्य करम किया।
रहे तिरंगा मोह, जिसके लिए जनम लिया।।

89

श्रवण

श्रवण पुत्र मां ज्ञानवती, कहते पिता अंधक।
नेत्र विहीन माता पिता, करते गमन तीरथ।।
करते गमन तीरथ, कांवर कांधे उठाई।
छिपे बैठे दशरथ, सरयु तट पहुंचे जाई।।
दशरथ बाण चलाए, जाकर बाण लगा श्रवण।
हा हा कर चिल्लाय, दुखिया मात पिता श्रवण।।

90

मौन

मौन रहे नर नार जो, मत समझो अग्यान।
दांत जहर से भर रहे, विष धर होत महान।।
विषधर होत महान, कह गये संत फकीरा।
आते ना ये काम, चाहे उदर लो चीरा।।
मनस्विनी कह चेत, है देख पराया कौन।

कपटी बदला लेत, जो रहत हमेशा मौन।।

91

अही

अही धरा बांबी रहे, विरले दर्शन देय।
आस्तीन में जो रहे, धोखे से डस लेय।।
धोखे से डस लेय, डसे ना मांगे पानी।
मधुर जहर हैं देत, झाड़-फूंक थके ज्ञानी।।
मनस्विनी जासूस, इनसे बचकर रहत सही।
मिले धरे बहुरूप, ऐसे विचरत जग अही।।

92

मंदिर

मंदिर में भगवान के, जाय सवेरे शाम।
दोई हाथ लड्डू रखे, झुककर शीश प्रणाम।।
झुककर शीश प्रणाम, वो रुपया एक चढ़ाते।
बदले में श्रीमान, मांग हजार फरमाते।।
कह मनस्विनी वाह, गजब के होत पुजारी।
चतुर सयाने शाह, जा रहे मंदिर द्वारी।।

93

सपूत

पूत सपूत ऊपजे, कुल का नाम बढाय।
अमा शशि ज्यों हरत है, उडुगन पार न पाय।।
उडुगन पार न पाय, उडुगन नभ की शोभा।
सौ कपूत से भले, सखी तू बांझन होजा।।
मनस्विनी कह बात, सेवा सबकी कर पूत।

कपूतन यश न भात, सू यश फैलात सपूत।।

(94)

माना

माना कि में मौन हूँ, मगर नहीं अनभिज्ञ।
कालचक्र बलबान है, सृष्टि नियंता विज्ञ।।
सृष्टि नियंता विज्ञ, गये अगणित बलशाली।
करके तू अभिमान नाश लीला रच डाली।।
कह मनस्विनी कूप, उचित अँगना नहिं जाना।
अनुचित तेरा चीन, कृत्य सबने भी माना।।

95

संस्कार

मैं मौन हूं अनभिज्ञ ना, सोचूं बारंबार।
अंतरिक्ष भी नाप लिया, भूल गइ संस्कार।।
भूल गइ संस्कार, परंपरा भी त्यागी।
खुलते ही मधुशाल सुरा ले सुन्दरी भागी।।
लख मनस्विनी रोय, सीता राधा नहीं मैं।
संस्कृति भई लोप, अनभिज्ञ ना मौन हूं मैं।।

96

बिचोलिया

बिचोलिया जग में भये, दो पाटन के सेतु।
वर वधू गठ जोड़ करे, स्नेह विवाह हेतु।।
स्नेह विवाह हेतु, पुरातन रीति चल आई।
अब करत लव विवाह, लड़का लड़की सगाई।।
मनस्विनी कह बात, का चाल का कुचालिया।

अब ढूंढे ना मिलत, विलुप्त जाति बिचोलिया।।

97

धीरज

धीरज धारो गेह में, कट जाये दिन-रात।
भोजन भजन और शयन, करो प्रेम से बात।।
करो प्रेम से बात, मिला है मौका अच्छा।
खुश राखो परिवार, यही है सौदा सच्चा।।
मनस्विनी कह बात, खिले कीचड़ में नीरज।
घरवाली के साथ, हृदय में राखो धीरज।।

98

तुकबंदी

आवे भाव न समझ में, ना कछु सार दिखाय।
इते उते से चुराके, तुकबंदी बन जाय।।
तुकबंदी बन जाय, उनकी पूँछ है भारी।
कह ताली बजवाय, सभा लेत मजा भारी।।
मनस्विनी न सुहाय, ऐसे कवित अब आवे।
कविता मुख से झरे, बरसा भाव हो आवे।।

99

सतयुग कोरोना

कोरोना की मार से, घर में रहते तंग।
भाग दोड़ सब छोड़ कर, रहते बच्चों संग।।
रहते बच्चों संग, पिता माता की सेवा।
पत्नी बना पकवान, लड्डू मिठाई मेवा।।
शाँति मनस्विनी होय, लूटपाट कहीं हो ना।

है कलियुग का अंत, बना सतयुग कोरोना।।

100

चमचा

चमचा का अब राज है, चमचा है सरदार।
चमचा धर्म सेतू है, चमचा होत प्रयाग।।
चमचा होत प्रयाग, इनकी शरण जो गहता।
विदेश करत प्रवास, वायूयान में फिरता।।
मनस्विनी दुर्भाग्य, मिला ना हमको चमचा।
बन जाते सब काज, करके दलाली चमचा।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- श्रीमती हेमलता शर्मा मनस्विनी,

जन्म- १०/१०/१९६५

शिक्षा- एम.ए. हिन्दी साहित्य

पता- हेमलता राजेंद्र शर्मा, मु.पो.साईंखेड़ा, केशवानंद नगर, जिला, नरसिंहपुर तह. गाडरवारा, पिनकोड-४८७६६१

ईमेल- Sharma hemlata 12345 @Gmail-com

उपलब्धियां- १. अंतरा शब्दशक्ति की मासिक ई-पत्रिका में रचनाओं का प्रकाशन
२. आंखों के झरने
३. रत्नावली साझा संग्रह
४. लोक जंग, दैनिक भास्कर में रचनाएं प्रकाशित
५. आपातकालीन फुलवारी
६. कई साहित्य ग्रुपों से सम्मान पत्र

सम्मान- व्हटासप फेसबुक के अनेक समूहों से सम्मान एवं प्रेरणा प्राप्त।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-235-7

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/